e-ISSN: 2319-8753 | p-ISSN: 2347-6710

IJIRSET
International Journal of Innovative Research in
SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

Volume 10, Issue 11, November 2021

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 7.569

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology (IJIRSET)

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 7.569|| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 10, Issue 11, November 2021 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2021.1011125|

नयी कविता में आख्यान का स्वरूप: दीर्घ कविता के संदर्भ में

गीतांजली कोलीवाल

सहायक आचार्य, हिन्दी, डॉ. भीमराव अम्बेडकर राजकीय महाविद्यालय, श्री गंगानगर, राजस्थान

सार

नयी कविता हिन्दी साहित्य में सन् १९५१ के बाद की उन कविताओं को कहा गया, जिनमें परंपरागत कविता से आगे नये भावबोधों की अभिव्यक्ति के साथ ही नये मूल्यों और नये शिल्प-विधान का अन्वेषण किया गया। यह प्रयोगवाद के बाद विकसित हुई हिन्दी कविता की नवीन धारा है। नयी कविता अपनी वस्तु-छवि और रूप-छवि दोनों में प्रगतिवाद और प्रयोगवाद का विकास होकर भी विशिष्ट है। नयी कविता आंदोलन का आरंभ इलाहाबाद की साहित्यिक संस्था परिमल के कवि लेखकों- जगदीश गुप्त, रामस्वरुप चतुर्वेदी और विजयदेव नारायण साही के संपादन में १९५४ में प्रकाशित नयी कविता (पत्रिका) से माना जाता है। इससे पहले अज्ञेय के संपादन में प्रकाशित काव्य-संग्रह 'दूसरा सप्तक' की भूमिका तथा उसमें शामिल कुछ कवियों के वक्तव्यों में अपनी कवितओं के लिये 'नयी कविता' शब्द को स्वीकार किया गया था। नयी कविता के लिए जगत्-जीवन से संबंधित कोई भी स्थिति, सम्बंध, भाव या विचार कथ्य के रूप में त्याज्य नहीं है। जन्म से लेकर मरण तक आज के मानव-जीवन का जिन स्थितियों, परिस्थितियों, सम्बंधों, भावों, विचारों और कार्यों से साहचर्य होता है, उन्हें नयी कविता ने अभिव्यक्त किया है। नए कवि ने किसी भी कथ्य को त्याज्य नहीं समझा है।

परिचय

कथ्य के प्रति नयी कविता में स्वानुभूति का आग्रह है। नया कवि अपने कथ्य को उसी रूप में प्रस्तुत करना चाहता है, जिस रूप में उसे वह अनुभूत करता है। नयी कविता वाद-मुक्ति की कविता है। इससे पहले के कवि भी प्रायः किसी न किसी वाद का सहारा अवश्य लेते थे। और यदि कवि वाद की परवाह न करें, किन्तु आलोचक तो उसकी रचना में काव्य से पहले वाद खोजता था-वाद से काव्य की परख होती थी। किन्तु नयी कविता की स्थिति भिन्न है। नया कवि किसी भी सिद्धांत, मतवाद, संप्रदाय या दृष्टि के आग्रह की कट्टरता में फँसने को तैयार नहीं। संक्षेप में, नयी कविता कोई वाद नहीं है, जो अपने कथ्य और दृष्टि में सीमित हो। कथ्य की व्यापकता और सृष्टि की उन्मुक्तता नई कविता की सबसे बड़ी विशेषता है। नई कविता परंपरा को नहीं मानती है। मनुष्यों में वैयक्तिक भिन्नता होती है, उसमें अच्छाईयाँ भी हैं और बुराईयाँ भी। नई कविता के कवि को मनुष्य इन सभी रूपों में प्यारा है। उसका उद्देश्य मनुष्य की समग्रता का चित्रण है। नई कविता जीवन के प्रति आस्था रखती है। आज की क्षणवादी और लघुमानववादी दृष्टि जीवन-मूल्यों के प्रति स्वीकारात्मक दृष्टि है। नई कविता में जीवन का पूर्ण स्वीकार करके उसे भोगने की लालसा है। जीवन की एक-एक अनुभूतियों को, व्यथा को, सुख को, सत्य मानकर जीवन को सघन रूप से स्वीकार करना क्षणों को सत्य मानना है।[1,2,3]

नई कविता ने जीवन को न तो एकांगी रूप में देखा न केवल महत् रूप में, उसने जीवन को जीवन के रूप में देखा। इसमें कोई सीमा निर्धारित नहीं की। जैसे- दुःख सबको माँजता है और, चाहे स्वयं सबको मुक्ति देना न जाने, किन्तु-जिसको माँजता है, उन्हें यह सीख देता है कि, सबको मुक्त रखें। (अज्ञेय)

नई कविता में दो तत्व प्रमुख हैं- अनुभूति की सच्चाई और बुद्धिमूलक यथार्थवादी दृष्टि। वह अनुभूति क्षण की हो या एक समूचे काल की, किसी सामान्य व्यक्ति की हो या विशिष्ट पुरूष की, आशा की हो या निराशा की, अपनी सच्चाई में कविता के लिए और जीवन के लिए भी अमूल्य है। नई कविता में बुद्धिवाद नवीन यथार्थवादी दृष्टि के रूप में भी है और नवीन जीवन-चेतना की पहचान के रूप में भी। यही कारण है कि तटस्थ प्रयोगशीलता नई कविता के कथ्य और शैली-दोनों की विशेषता है। नया कवि अपने कथ्य के प्रति तटस्थ वृत्ति रखता है, क्योंकि उसका प्रयत्न वादों से मुक्त रहने का रहता है। इस विशेषता के कारण नई कविता में कथ्यों की कोई एक परिधि नहीं है। इसमें तो कथ्य से कथ्य की नई परतें उघड़ती आती हैं। कभी-कभी वह अपने ही कथनों का खण्डन भी कर देता है- ईमानदारी के कारण। नया कवि डूबकर भोगता है, किन्तु भोगते हुए डूब नहीं जाता।

नई कविता जीवन के एक-एक क्षण को सत्य मानती है और उस सत्य को पूरी हार्दिकता और पूरी चेतना से भोगने का समर्थन करती है। अनुभूति की सच्चाई, जितना वह ले पाता है, उतना ही उसके काव्य के लिए सत्य है। नई कविता अनुभूतिपूर्ण गहरे क्षणों, प्रसंगों, व्यापार या किसी भी सत्य को उसकी आंतरिक मार्मिकता के साथ पकड़ लेना चाहती है। इस प्रकार जीवन के सामान्य से सामान्य दीखनेवाले व्यापार या प्रसंग नई कविता में नया अर्थ पा जाते हैं। नई कविता में क्षणों की अनुभूतियों को लेकर बहुत-सी मर्मस्पर्शी कविताएँ लिखी गई हैं। जो आकार में छोटी होती हैं किन्तु प्रभाव में अत्यंत तीव्र। नई कविता परंपरा को नहीं मानती। इन कवियों ने

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 7.569|| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 10, Issue 11, November 2021 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2021.1011125|

परंपरावादी जड़ता का विरोध किया है। प्रगतिशील कवियों ने परंपरा की जड़ता का विरोध इसलिए किया है कि वह लोगों को शोषण का शिकार बनाती है और दुनिया के मजदूरों तथा दलितों को एक झंड़े के नीचे एकत्र होने में बाधा डालती है। नया कवि उसका विरोध इसलिए करता है कि उसके कारण मानव-विवेक कुंठित हो जाता है।

नई कविता सामाजिक यथार्थ तथा उसमें व्यक्ति की भूमिका को परखने का प्रयास करती है। इसके कारण ही नई कविता का सामाजिक यथार्थ से गहरा संबंध है। परंतु नई कविता की यथार्थवादी दृष्टि काल्पनिक या आदर्शवादी मानववाद से संतृष्ट न होकर जीवन का मूल्य, उसका सौंदर्य, उसका प्रकाश जीवन में ही खोजती है। नई कविता द्विवेदी कालीन कविता, छायावाद या प्रगतिवाद की तरह अपने बने-बनाये मूल्यलादी नुस्ख़े पेश नहीं करती, बल्कि वह तो उसे जीवन की सच्ची व्यथा के भीतर पाना चाहती है। इसलिए नई कविता में व्यंग्य के रूप में कहीं पुराने मूल्यों की अस्वीकृति है, तो कहीं दर्द की सच्चाई के भीतर से उगते हुए नए मूल्यों की संभावना के प्रति आस्था। नई कविता ने धर्म, दर्शन, नीति, आचार सभी प्रकार के मूल्यों को चुनौती दी है। नई कविता का स्वर अपने परिवेश की जीवनानुभूति से फूटा है।

नई कविता में शहरी जीवन और ग्रामीण-जीवन-दोनों परिवेशों को लेकर लिखनेवाले कवि हैं। अज्ञेय ने दोनों पर लिखा है। जबकि बालकृष्ण राव, शमशेर बहादुर सिंह, गिरिजाकुमार माथुर, कुँवरनारायण सिंह, धर्मवीर भारती, प्रभाकर माचवे, विजयदेवनारायण साही, रघुवीर सहाय आदि कवि की संवेदनाएँ और अनुभूतियाँ शहरी परिवेश की हैं तो दूसरी ओर भवानीप्रसाद मिश्र, केदारनाथ सिंह, शंभुनाथ सिंह, ठाकुरप्रसाद सिंह, नागार्जुन, केदारनाथ अग्रवाल आदि ऐसे कवि हैं जो मूलतः गाँव की अनुभूतियाँ और संवेदना से जुड़े हैं। इनके अतिरिक्त उसमें जहाँ घुटन, व्यर्थता, ऊब, पराजय, हीन-भाव, आक्रोश हैं, वहीं आत्मपीड़न परक भावनाएँ भी हैं। नई कविता का परिवेश अपने यहाँ का जीवन है। किन्तु उस पर आक्षेप है कि उसमें अतिरिक्त अनास्था, निराशा, व्यक्तिवादी कुंठा और मरणधर्मिता है[4,5,6] जो पश्चिम की नकल से पैदा हुई है।

नई कविता में पीड़ा और निराशा को कहीं-कहीं जीवन का एक पक्ष न मानकर समग्र जीवन-सत्य मान लिया गया है। वहाँ पीड़ा जीवन की सर्जनात्मक शक्ति न बनकर उसे गतिहीन करनेवाली बाधा बन गई है। लोक-संपुक्ति नई कविता की एक खास विशेषता है। वह सहज लोक-जीवन के करीब पहुँचने का प्रयत्न कर रही है। भवानी प्रसाद मिश्र की कविताओं की समीक्षा करते हुए प्रोफेसर महावीर सरन जैन का कथन है कि "हिन्दी की नई कविता पर सबसे बड़ा आक्षेप यह है कि उसमें अतिरिक्त अनास्था, निराशा, विशाद, हताशा, कुंठा और मरणधर्मिता है। उसको पढ़ने के बाद जीने की ललक समाप्त हो जाती है, व्यक्ति हतोत्साहित हो जाता है, मन निराशावादी और मरणासन्न हो जाता है। यह कि नई कविता ने पीड़ा, वेदना, शोक और निराशा को ही जीवन का सत्य मान लिया है।

नई कविता भारत की जमीन से प्रेरणा प्राप्त नहीं करती। इसके विपरीत यह पश्चिम की नकल से पैदा हुई है। भवानी प्रसाद मिश्र की कविताएँ इन सारे आरोपों को ध्वस्त कर देती हैं। मिश्र जी गाँधीवादी है। गाँधी की देश-भक्ति मंजिल नहीं है। गाँधी जी की देश-भक्ति विश्व के जीव मात्र के प्रति प्रेम और उसकी सेवा करने के लिए उनकी जीवन यात्रा का एक पड़ाव है। उनके विचार में कहीं भी लेश मात्र भी निराशा का भाव नहीं है। उसमें आशा, विश्वास और आस्था की ज्योति आलोकित है। इसी आलोक के कारण गाँधी जी ने दक्षिण-अफ्रीका और भारत में जो जन-आन्दोलन चलाए उन्होंने सम्पूर्ण समाज में नई जागृति, नई चेतना और नया संकल्प भर दिया। उनके जीवन दर्शन से विशाद, निराशा और मरण-धर्मिता नहीं अपितु इसके सर्वथा विपरीत नई आशा, नई आस्था और नई उमंग पैदा होती है। उससे सत्य, अहिंसा एवं प्रेम की त्रिवेणी प्रवाहित होती है। (देखें – प्रोफेसर महावीर सरन जैन : गाँधी दर्शन की प्रासंगिकता)। भवानी प्रसाद मिश्र की कविताएँ इसी कारण समाज में जो विपन्न हैं, लाचार हैं, थके हुए हैं, धराशायी हैं उन सबको सहारा देने के लिए प्रेरित करती हैं, उनको उठाने के लिए प्रोत्साहित करती हैं"।

नई कविता ने लोक-जीवन की अनुभूति, सौंदर्य-बोध, प्रकृत्ति और उसके प्रश्नों को एक सहज और उदार मानवीय भूमि पर ग्रहण किया। साथ ही साथ लोक-जीवन के बिंबों, प्रतीकों, शब्दों और उपमानों को लोक-जीवन के बीच से चुनकर उसने अपने को अत्यधिक संवेदनापूर्ण और सजीव बनाया। कविता के ऊपरी आयोजन नई कविता वहन नहीं कर सकती। वह अपनी अन्तर्लय, बिंबात्मकता, नवीन प्रतीक-योजना, नये विशेषणों के प्रयोग, नवीन उपमान में कविता के शिल्प की मान्य धारणाओं से बाकी अलग है।

नई कविता की भाषा किसी एक पद्धति में बँधकर नहीं चलती। सशक्त अभिव्यक्ति के लिए बोलचाल की भाषा का प्रयोग इसमें अधिक हुआ है। नई कविता में केवल संस्कृत शब्दों को ही आधार नहीं बनाया है, बल्कि विभिन्न भाषाओं के प्रचलित शब्दों को स्वीकार किया गया है। नए शब्द भी बना लिए गये हैं। टोये, भभके, खिंचा, सीटी, ठिठुरन, ठसकना, चिडचिड़ी, ठूँठ, विरस, सिराया, फुनगियाना – जैसे अनेक शब्द नई कविता में धड़ल्ले से प्रयुक्त हुए हैं। जिससे इसकी भाषा में एक खुलापन और ताज़गी दिखाई देती है। इसकी भाषा में लोक-भाषा के तत्व भी समाहित हैं।

नई कविता में प्रतीकों की अधिकता है। जैसे- साँप तुम सभ्य तो हुए नहीं, न होंगे, नगर में बसना भी तुम्हें नहीं आया। एक बात पूँछु? उत्तर दोगे! फिर कैसे सीखा डँसना? विष कहाँ पाया? (अज्ञेय) नई कविता में बिंब भी विपुल मात्रा में उपलब्ध है। नई कविता की

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 7.569|| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 10, Issue 11, November 2021 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2021.1011125|

विविध रचनाओं में शब्द, अर्थ, तकनीकी, मुक्त आसंग, दिवास्वप्न, साहचर्य, पौराणिक, प्रकृति संबंधी काव्य बिंब निर्मित्त किए गये हैं। जैसे- सामने मेरे सर्दी में बोरे को ओढकर, कोई एक अपने, हाथ पैर समेटे, काँप रहा, हिल रहा,-वह मर जायेगा। (मुक्तिबोध)

नई कविता में छंद को केवल घोर अस्वीकृति ही मिली हो- यह बात नहीं, बल्कि इस क्षेत्र में विविध प्रयोग भी किये गये हैं। नये कवियों में किसी भी माध्यम या शिल्प के प्रति न तो राग है और न विराग। गतिशीलता के प्रभाव के लिए संगीत की लय को त्यागकर नई कविता ध्वनि-परिवर्तन की ओर बढ़ती गई है। एक वर्ण्य विषय या भाव के सहारे उसका सांगोपांग विवरण प्रस्तुत करते हुए लंबी कविता या पूरी कविता लिखकर उसे काव्य-निबंध बनाने की पुरानी शैली नई कविता ने त्याग दी है। नई कविता के कवियों ने लंबी कविताएँ भी लिखी हैं। किन्तु वे पुराने प्रबंध काव्य के समानान्तर नहीं हैं। नई कविता का प्रत्येक कवि अपनी निजी विशिष्टता रखता है। नए कवियों के लिए प्रधान है सम्प्रेषण, न कि सम्प्रेषण का माध्यम। इस प्रकार हम देखते हैं कि नई कविता कथ्य और शिल्प-दोनों ही दृष्टियों से महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

विचार-विमर्श

दुर्योधन कब मिट पाया

इस दीर्घ कविता के पिछले भाग अर्थात् तेरहवें भाग में अभिमन्यु के गलत तरीके से किये गए वध में जयद्रथ द्वारा निभाई गई महत्वपूर्ण भूमिका और तदुपरांत केशव और अर्जुन द्वारा अभिमन्यु की मृत्यु का प्रतिशोध लेने के लिए रचे गए प्रपंच के बारे में चर्चा की गई थी। कविता के वर्तमान प्रकरण अर्थात् चौदहवें भाग में देखिए कैसे प्रतिशोध की भावना से वशीभूत होकर अर्जुन ने जयद्रथ का वध इस तरह से किया कि उसका सर धड़ से अलग होकर उसके तपस्वी पिता की गोद में गिरा और उसके पिता का सर टुकड़ों में विभक्त हो गया। प्रतिशोध की भवना से ग्रस्त होकर अगर अर्जुन जयद्रथ के निर्दोष तपस्वी पिता का वध करने में कोई भी संकोच नहीं करता , तो फिर प्रतिशोध की उसी अग्नि में दहकते हुए अश्वत्थामा से जो कुछ भी दुष्कृत्य रचे गए , भला वो अधर्म कैसे हो सकते थे? प्रस्तुत है दीर्घ कविता "दुर्योधन कब मिट पाया " का चौदहवाँ भाग।

============================

निरपराध थे पिता जयद्रथ के पर वाण चलाता था,

ध्यान मग्न थे परम तपस्वी पर संधान लगाता था।[7,8,9]

प्रभुलीन के चरणों में गिरा कटा हुआ जयद्रथ का सिर ,

देख पुत्र का शीर्ष विक्षेपण पिता हुए थे अति अधीर।

===========================

और भाग्य का खेला ऐसा मस्तक फटा तात का ऐसे,

खरबूजे का फल हाथ से भू पर गिरा हुआ हो जैसे।

छाल प्रपंच जग जाहिर अर्जुन केशव से बल पाता था ,

पूर्ण हुआ प्रतिशोध मान कर चित में मान सजाता था।

============================

गर भ्राता का ह्रदय फाड़ना कृत्य नहीं बुरा होता,

नरपशु भीम का प्रति

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 7.569|| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 10, Issue 11, November 2021 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2021.1011125|

नयी कविता 'भारतीय स्वतंत्रता' के बाद लिखी गयी उन कविताओं को कहा गया, जिनमें परंपरागत कविता से आगे नये भावबोधों की अभिव्यक्ति के साथ ही नये मूल्यों और नये शिल्प-विधानों का अन्वेषण किया गया| यह अन्वेषण साहित्य में कोई नयी वस्तु नहीं है। ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में देखें तो प्राय: सभी नये वाद या नयी-नयी धाराएं अपने पूर्ववर्ती वादों या धाराओं की तुलना में कुछ नवीन अन्वेषण की प्यास लिये दिखायी पड़ती है। साहित्य की यह नवीनता सदैव श्लाध्य है, यदि वह अपना संबंध बदलते हुए सामाजिक जीवन के मूल सत्यों से बनाये रखे।

इस प्रकार नित नवता की एक परंपरा गतिमान रही है। फिर भी 'नयी कविता' नाम स्वतंत्रता के बाद लिखी गयी उन कविताओं के लिए रूढ़ हो गया, जो अपनी वस्तु-छवि और रूप-छवि दोनों में पूर्ववर्ती प्रगतिवाद और प्रयोगवाद का विकास हो कर भी विशिष्ट हैं। नयी कविता की प्रवृत्तियों की परीक्षा करने पर उसकी सबसे पहली विशिष्टता जीवन के प्रति उसकी आस्था में दिखायी पड़ती है।आज की क्षणवादी और लघु मानववादी दृष्टि जीवनमूल्यों के प्रति नकारात्मक नहीं, स्वीकारात्मक दृष्टि है।

नयी कविता ने जीवन को उपर्युक्त धाराओं की कविताओं की तरह न तो एकांगी रूप में देखा,न केवल महत्व रूप में,बल्कि उसके जीवन को (वह चाहे किसी वर्ग का हो, चाहे व्यक्ति का हो,चाहे समाज का हो) जीवन के रूप में देखा) इसमें कोई सीमा नहीं निर्धारित की, मनुष्य किसी वर्गीय चेतना, सिद्धांत अथवा आदर्श की बैसाखी पर चलता हुआ लइसके पास नहीं आया,वह अपने संपूर्ण दु:ख-सुख, राग-विराग के परिवेश से संयुक्त राम मनुष्य के रूप में आया। [९]

परिणाम

इस दीर्घ कविता के पिछले भाग अर्थात् सत्रहवें भाग में दिखाया गया जब कृपाचार्य , कृतवर्मा और अश्वत्थामा ने देखा कि पांडव पक्ष के योद्धाओं की रक्षा कोई और नहीं , अपितु कालों के काल साक्षात् महाकाल कर रहे हैं तब उनके मन में दुर्योधन को दिए गए अपने वचन के अपूर्ण रह जाने की आशंका होने लगी। कविता के वर्तमान भाग अर्थात अठारहवें भाग में देखिए इन विषम परिस्थितियों में भी अश्वत्थामा ने हार नहीं मानी और निरूत्साहित पड़े कृपाचार्य और कृतवर्मा को प्रोत्साहित करने का हर संभव प्रयास किया। प्रस्तुत है दीर्घ कविता दुर्योधन कब मिट पाया का अठारहवाँ भाग।

==================
अगर धर्म के अर्थ करें तो ,
बात समझ ये आती है,
फिर मन के अंतरतम में कोई ,
दुविधा रह ना पाती है।
भान हमें ना लक्ष्य हमारे ,
कोई पुण्य विधायक ध्येय,
पर अधर्म की राह नहीं हम ,
भी ना मन में है संदेह।
===========
बात सत्य है अटल तथ्य ये ,
बाधा अतिशय भीषण है ,
दर्प होता योद्धा को जिस बल ,
का पर एक परीक्षण है ।
यही समय है हे कृतवर्मा,
निज भुज बल के चित्रण का,
कैसी शिक्षा मिली हुई क्या ,
असर हुआ है शिक्षण का।[10,11,12]
============
लक्ष्य समक्ष हो विकट विध्न तो ,
झुक जाते हैं नर अक्सर,
है स्वयं सिद्ध करने को योद्धा ,
चूको ना स्वर्णिम अवसर।
आजीवन जो भुज बल का ,
जिह्वा से मात्र पदर्शन करते,
उचित सर्वथा भू अम्बर भी ,

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 7.569|| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 10, Issue 11, November 2021 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2021.1011125|

कुछ तो इनका दर्शन करते।
============
भय करने का समय नहीं ना ,
विकट विघ्न गुणगान का,
आज अपेक्षित योद्धा तुझसे ,
कठिन लक्ष्य संधान का।
वचन दिया था जो हमने क्या ,
महा देव से डर जाए?
रुद्रपति अवरोध बने हो तो,
क्या डर कर मर जाए?
============
महाकाल के अति सुलभ दर्शन,
नर को ना ऐसे होते ,
जन्मों की हो अटल तपस्या ,
तब जाकर अवसर मिलते।
डर कर मरने से श्रेयकर है ,
टिक पाए हम इक क्षण को,
दाग नहीं लग पायेगा ना ,
प्रति बद्ध थे निज प्रण को।
============
जो भी वचन दिया मित्र को ,
आमरण प्रयास किया,
लोग नहीं कह पाएंगे ,
खुद पे नाहक विश्वास किया।
और शिव के हाथों मरकर ,
भी क्या हम मर पाएंगे?
महाकाल के हाथों मर ,
अमरत्व पूण्य वर पाएंगे।
===========
अजय अमिताभ सुमन:
सर्वाधिकार सुरक्षित

आजादी के बाद लिखी गई उन कविताओं को नयी कविता कहा गया। जिनमें परंपरागत कविता से आगे नये जीवन- भावबोधों और नये शिल्प-विधान का अन्वेषण किया गया। यह नयापन आजादी के बाद बदले हुए नए पर्यावरण की देन था। हालांकि साठ के बाद साठोत्तरी पीढ़ी के समकालीन कवियों ने जिस मोहभंग का महसूस किया। उसके त्रासद और कड़वे अनुभव भी इस कविता में मिलने लगते हैं।

जगदीश गुप्त ने नई कविता के विषय में लिखा, 'नई कविता उन प्रबुद्ध आस्वादकों को लक्षित करके लिखी जा रही है, जिनकी मानसिक अवस्था और बौद्धिक चेतना नये कवि के समान है अर्थात् जो उसके समानधर्मी है।' कई अर्थों में सन् 1947 के बाद की हिंदी कविता में अचरज में डालने वाले नए प्रयोगों के नाम पर असामाजिक, स्वार्थ-प्रेरित,अहम्निष्ठ,घोर रुग्ण व्यक्तित्व, दमित वासनाओं और कुंठाओं, चूड़ी. चोटी और चप्पल जैसे विषयों को बिना किसी बड़े रचनात्मक उद्देश्य के कविता का रूप दिया जाने लगा। ये सभी विशेषताएँ नयी कविता के कवियों ने प्रयोगवादी कविता से ग्रहण की थी। इस युग की कविता में यह प्रवृत्तियाँ थोड़ी बदली हुई रूप में मिलती है।

दिलचस्प तथ्य यह है कि ऐसा करने वाले कई कवि पहले प्रगतिवादी थे, बाद में प्रयोगवादी हो गये वे अपने-आप को वामपंथी कहते थे, किंतु असलियत में यह बने हुए या दिखावटी वाममार्गी थे। इन कवियों ने प्रयोगवाद के विरोध को देखते हुए नयी कविता में शरण ली। जल्दी ही इनकी वास्तविकता उजागर हो गई। लोगों ने नयी कविता के मुखौटे के पीछे दिखावटी प्रयोगवाद के इस चेहरे को पहचान लिया।

वास्तविक प्रयोगवादी कवियों ने दो बड़े काम किए- एक तो व्यक्ति के मन की उलझी हुई संवेदनाओं और अचेतन मन के सत्यों को आज के युग सत्य मानकर उन्हें उद्घाटित करने की कोशिश की। दूसरी: उन्होंने उन मानसिक सच्चाईयों को प्रकाशित कर सकने

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 7.569|| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 10, Issue 11, November 2021 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2021.1011125|

लायक नये शिल्प का अन्वेषण किया। प्रयोगवादी कविता जीवन के जुड़ाव से कटकर रह गयी क्योंकि इसका को जीवन के प्रति बेहद निराश था।[२]

नयी कविता का सफर सन् 1943 में अज्ञेय द्वारा संपादित और प्रकाशित 'तारसप्तक' से शुरू होती है। इसे तीन चरणों में बांटकर देख सकते हैं।

>(1) पहले दौर की नयी कविता में लगभग वही कवि हैं, जिन की रचनाएँ 'तारसप्तक' में प्रकाशित हुईं। 'तारसप्तक' के इन कवियों में केवल डॉ. रामविलास शर्मा ही ऐसे कवि थे, जो अंत तक प्रगतिवादी ही रहे। वे क्लासिक और अनिवार्य वामपंथ छोड़कर उदारवादी वाममार्ग पर चले। सप्तक-परंपरा से अलग कवियों में नरेश मेहता सरीखे कवियों की रचनात्मक प्रगतिशीलता विकसित हुई। इस चरण के अन्य कवियों में नागार्जुन ने तीखे राजनीतिक व्यंग्य लिखे। वे कविता को आगे ले गए। बालकृष्ण राव की कविता में आस्था, आशा और आत्मविश्वास देखने को मिलता है। जगदीश गुप्त के भीतर सौंदर्य और प्रेम का रचनाकार एवं सजग चित्रकार विकसित हुआ है। दुष्यंत कुमार की कविता गजल के शिल्प में व्यक्त हुई है। ठाकुर प्रसाद सिंह ने लोकगीतों की भाव संपदा को नवगीतों में उतारने की सफल कोशिश की है। कीर्ति चौधरी नयी कविता के प्रथम चरण की भाव चेतना की रचनाकार हैं। इस चरण की समाप्ति अज्ञेय के कविता संग्रह 'आंगन के द्वार पर (सन् 1961) के प्रकाशित होने पर होती है।

>(2) दूसरे चरण के नई कविता के कवियों में मुक्तिबोध, शमशेर बहादुर सिंह, धर्मवीर भारती, रघुवीर सहाय, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, केदारनाथ सिंह तथा विजयदेव नारायण साही प्रमुख हैं। यह सब अलग-अलग जमीनों और विचारधाराओं के कवि हैं। इनकी कविताओं में द्वंद्व, संघर्ष-विद्रोह, विसंगति, आक्रोश, बेचैनी की अभिव्यक्ति है। आधुनिकता का संपूर्ण युगबोध इन कविताओं का केंद्रीय स्वर है। इस दौर की कविता में मानवीय स्वतंत्रता, लघु मानव की स्थापना और आत्म चेतना के प्रखर स्वर है।

>(3) तीसरे दौर में पहुंचकर नयी कविता अलग-अलग दिशाओं में मुड़ती है। यह नयी कविता की विघटन की स्थिति न होकर उसके विकास की स्थिति थी। इस युग के लघु मानव के अस्तित्व के असमर्थता बोध से नयी कविता का कवि प्रभावित हुआ। तत्कालीन मनुष्य का सौंदर्यबोध नष्ट हो गया। इसका नए कवि पर असर हुआ। परिणाम यह हुआ कि विवशता, भय, ऊब, आतंक और अकेलेपन का बोध नयी कविता पर छाने लगा। नयी कविता की एक और काव्यधारा मनुष्य की स्थितिहीनता को स्वीकार कर रही थी। लेकिन वह मूल्यहीनता को लक्ष्य नहीं मानती थी। इस धारा के कवि मानव-मुक्ति और सत्य की उपलब्धि में विश्वास करते हैं। उनका दृष्टिकोण वैज्ञानिक है। इन कवियों में केदारनाथ सिंह, विपिन कुमार अग्रवाल, अशोक वाजपेयी, मणि मधुकर, अजित कुमार आदि के नाम उल्लेखनीय है। यह नई कविता के अंतिम दौर में [13,14,15]उभरने वाले कवि हैं। इनमें से मणि मधुकर, केदारनाथ सिंह और अशोक वाजपेयी परवर्ती पीढ़ी के महत्त्वपूर्ण कवि के रूप में प्रतिष्ठित हए।

नई कविता की काव्यगत प्रवृत्तियाँ

---

(1)जीवन-जगत के प्रति अगाध प्रेम एवं आस्था

नयी कविता के कवियों ने जीवन को उत्सव के रूप में देखा है। उन्होंने समाज के प्रत्येक वर्ग के व्यक्ति के जीवन में इन संदर्भों को रेखांकित करने की कोशिश की है। नयी कविता में जीवन के प्रति प्रेम, आशा, विश्वास और आस्था की आवाजें सुनायी पड़ती है। नई कविता के प्रगतिशील रूझान के कवि केदारनाथ अग्रवाल 'युग की गंगा' की भूमिका में लिखते हैं कि- 'इन कविताओं में पलायनवादिता नहीं है, देश की जागृति, शक्ति का उबाल है।' केदार की 'कोहरा' शीर्षक कविता की निम्न पंक्तियाँ इस का प्रमाण है-

"पर निश्चय है, दृढ़ निश्चय है इतना, दिनकर जाएगा लपटों से लिपटा। भस्मीभूत करेगा कोहरा क्षण में, प्यारी धरती को स्वाधीन करेगा।"

'फूल नहीं रंग बोलते हैं कविता की निम्न पंक्तियों में भी केदार जीवन के प्रति आस्था प्रकट व्यक्त हैं-

"पेड़ नहीं पृथ्वी के वंशज हैं फूल लिए फल लिए मानव के अग्रज हैं।"

दुष्यंत कुमार की कविता की निम्न पंक्तियों में भी हम इंसानी जीवन के साथ लगाव की भावना दिखाई देती है-

"चेतना ये, होकर सफल आए न आए, पर मैं जिऊंगा नयी फसल के लिए, कभी ये नयी फसल आए न आए।"

नई उम्र की नई फसल का प्रयोगवादी अनदेखा कर रहे थे नई कविता ने उसमें निहित आस्था-विश्वास को प्रेरणा के रूप में ग्रहण किया है।

(2)आस्था और विश्वास

नई कविता में निराशा, अनास्था और अविश्वास के साथ-साथ आशा, आस्था और विश्वास के स्वर भी सुखद प्रतिपक्ष के रूप में सुनाई पड़ते हैं। आरंभ में इन कवियों में घोर निराशा दिखाई देती है, लेकिन बाद में यही कवि आशा और विश्वास से भरी कविताएँ लिखने लगे। यही आशावादी दृष्टिकोण आगे चलकर समकालीन प्रश्नों और समस्याओं से जूझता हुआ दिखाई देता है। आशा का बिंब आगे चलकर स्वास्थ्य का प्रतीक बन गया है।

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 7.569|| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 10, Issue 11, November 2021 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2021.1011125|

(3)मानवतावादी यथार्थ दृष्टिकोण

नयी कविता के कवियों का मानवतावाद किताबी आदर्श की हवाई कल्पनाओं पर नहीं टिका है। यथार्थ की प्रखर चेतना मनुष्य को उसके समूचे पर्यावरण सहित समझने का बौद्धिक उपक्रम तथा जटिल मानवीय संवेदना के अनेकायामी स्तरों तक अनुभूतिपरक और विश्लेषात्मक स्तरों तक पहुंचने की कोशिश करती है। इस युग में मानव की भौतिक प्रगति के अनेक रास्ते खुले हैं किंतु साथ ही उसके अपने अस्तित्व के लिए विषम-विसंगत परिस्थितियाँ भी पैदा हुई हैं। यह युग-सत्य है। मनुष्य को इन उलझी हुई और संकट में डालने वाली परिस्थितियों पर काबू पाना है। निराशा, पीड़ा और दुख को झेलकर सुखों को बांटना है। दुष्यंत कुमार के काव्य संग्रह'सूर्य का स्वागत' में संकलित एक कविता की निम्न पंक्तियाँ इस अनुभूति को अभिव्यक्त करती हैं-

"छोटी-सी एक खुशी अधरों में आई मैंने उसको जला दिया मुझ को संतोष हुआ और लगा

हर छोटे को बड़ा करना धर्म है।"[16]

केदारनाथ सिंह के कविता संग्रह'अभी बिल्कुल अभी' की कविताएँ भी कवि के यथार्थपरक मानवतावादी विचारों को उजागर करती हैं।

(4)महानगरीय और ग्रामीण मानवीय सभ्यता का यथार्थ चित्रण

नयी कविता में महानगरीय शहरी तथा ग्रामीण जीवन संस्कारों के नवीन और यथार्थवादी चित्रण मिलते हैं। इस दौर में कविता के केंद्र गाँव और छोटे शहरों से शिफ्ट होकर महानगर बन रहे थे कई सभ्यताओं और संस्कारों के आपसी टकराव नई कविता में दर्ज़ हुए हैं।

अज्ञेय ने शहरी जीवन की यथार्थ शक्ल अपनी 'साँप' शीर्षक में उभारते हुए लिखा है-

"साँप! तुम सभ्य तो हुए नहीं, नगर में वसना भी तुम्हें नहीं आया। एक बात पूछा-(उत्तर दोगे?) तब कैसे सीखा डसना- विष कहाँ से पाया?"

यहाँ तीखा व्यंग्य भाव है जबकि धूमिल अपने गांव खेवली का मार्मिक चित्र प्रस्तुत करते हुए लिखते हैं-

"वहाँ कोई सपना नहीं है। न भेड़िये का डर। बच्चों को सुलाकर औरतें खेत पर चली गई हैं। खाये जाने लायक कुछ भी शेष नहीं है। वहाँ सब कुछ सदाचार की तरह स्पाट और ईमानदारी की तरह असफल है।"

नई कविता में परिवेश, मनुष्य-जीवन और उसकी सभ्यता में आते बदलावों का यथार्थ अंकन हुआ है।

(5) घोर वैयक्तिकता

नई कविता का केंद्रीय विषय निजी मान्यताओं,विचारधाराओं एवं अनुभूतियों को उजागर करना है। नई कविता अहम के भाव से ग्रस्त और त्रस्त है। कई जगह वह आत्म विज्ञापन का घोर समर्थक नजर आती हैं।

"साधारण नगर के एक साधारण घर में मेरा जन्म हुआ --*--*--* जुट गया ग्रंथों में मुझे परीक्षाओं में विलक्षण श्रेय मिला।"

यह नए कवि भारत भूषण अग्रवाल के जीवन का निजी सत्य है।

(6)निराशा

नई कविता में मनुष्य की सहायता, विवशता, अकेलापन,मानवीय-मूल्यों का विघटन, सामाजिक विषमताओं तथा युद्ध के विकराल परिणामों का चित्रण किया गया है जिससे कवि क हताश मन का उदघाटन हाता है-

"प्रश्न तो बिखरे यहाँ हर ओर है, किंतु मेरे पास कुछ उत्तर नहीं।"

कवि अपने चारों ओर सवाल-दर-सवाल महसूस करता है, किंतु उनका उत्तर उसके पास नहीं है।

"आस्था न काँपे, मानव फिर मिट्टी का भी देवता हो जाता है।" अज्ञेय इन पंक्तियों में मानव पर विश्वास व्यक्त करते हैं।

(7)नास्तिकता

बौद्धिक एवं वैज्ञानिक युग से संबंधित होने के कारण नई कविता मे भावात्मक दृष्टिकोण से विरोध दिखाई पड़ता है। नए कवि का ईश्वर, नियति भाग्य, मंदिर और अन्य देवी-देवताओं में भरोसा नहीं है। वह स्वर्ग-नरक का अस्तित्व नहीं मानता-

"उर्वशी ने डांस स्कूल खोल दिया है। गणेश जी टॉफी खा रहे हैं।" भारतभूषण अग्रवाल इन पंक्तियों में देवी-देवताओं का उपहास उडाते हैं।

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 7.569|| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 10, Issue 11, November 2021 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2021.1011125|

(8)क्षणवाद का महत्त्व

नयी कविता क्षणों की अनुभूतियों को महत्व देती है। वह क्षणों में बंटे जीवन की पूर्णता क्षणों में जीना चाहती है। नयी कविता के कवियों के यहाँ एक-एक क्षण का बोध जीवन की चरम अनुभूति और संदर्भगर्भित जीवन सत्य है। अपने दर्शन के अनुसार वे जीवन का संपूर्ण उपभोग करना चाहते हैं। नयी कविता अनुभूति पूर्ण गहरे क्षण-प्रसंग, कार्य-व्यापार या सत्य को उसकी आंतरिक मार्मिकता के साथ पकड़ लेना चाहती है। इस प्रकार जीवन के सामान्य दीखने वाले व्यापार या प्रसंग नयी कविता में नया अर्थ-संदर्भ पा जाते हैं-

"आओ इस झील को अमर कर दें।[17,18] छूकर नहीं किनारे बैठ कर भी नहीं एक संग झांक इस दर्पण में अपने को दे दें हम इस जल को जो समय है।"

इन रचनाकारों के लिए 'जो भी है. बस यही एक पल है' का क्षणवादी अनुभव समूचा जीवन सत्य बन जाता है। नई कविता का कवि क्षण-विशेष की अनुभूति को विशेष महत्व देता है। उसके लिए सुख का एक क्षण संपूर्ण जीवन से अधिक महत्वपूर्ण है-

" एक क्षण : क्षण में प्रवहमान व्याप्त संपूर्णता।" नया कवि क्षण में ही जीवन की पूर्णता के दर्शन करता है।

(9)भोगवाद और वासना

नई कविता में क्षणवादी विचारधारा ने भोगवाद को जन्म दिया है। नई कविता में भोग और वासना का स्वर मुख्य है। नया कवि आध्यात्मिक दृष्टिकोण के अभाव के कारण उधार की उत्सवधर्मिता का पक्षपाती बन गया है। इसके बहाव में उसने सामाजिक मूल्यों का उल्लंघन भी किया है । वह आत्मिक सौंदर्य की उपेक्षा कर दैहिक सौंदर्य को सर्वोपरि मानता है। इस प्रकार नई कविता कहीं-कहीं समाज में अश्लीलता, अनैतिकता और अराजकता का वातावरण उत्पन्न करती हुई दिखाई पड़ती है-

"प्यार है अभिशप्त तुम कहाँ हो नारी?" अज्ञेय की यह पंक्तियाँ इस संदर्भ में देखने योग्य है।

(10)नए जीवन मूल्यों की प्रस्तावना

नयी कविता नए जीवन मूल्यों को प्रस्तावित करती है। इस सिलसिले में यह कवि पुराने मूल्यों की परीक्षा करते । है। ये मूल्य नए युग की आवश्यकताओं के परिवेश में कितने खरे उतरते हैं और अपने परंपरित रूप में कितने असंगत हो गये हैं? इनका कितना स्वरूप आज के लिए प्रासंगिक है? इत्यादि प्रश्न नयी कविता का कवि करता है। उसकी सवालिया निगाह इन मूल्यों के नए मनुष्य के संदर्भ में परखती है। इस पड़ताल में मूल्यगत असंगतियाँ नए कवि के व्यंग्य का निशाना बनती हैं। नये संदों में सिद्ध होने वाले मानवीय मूल्यों के प्रति कवि अपनी आस्था व्यक्त करते हैं। नई कविता बदलते मापदंड और मूल्यों या मूल्यहीनता पर प्रकाश डालती है।

(11)व्यंग्य का तीखा स्वर

नयी कविता में व्यंग्य का स्वर बेहद तीखा और निर्मम है। नयी कविता का कवि जीवन की व्यावहारिकता और तार्किकता पर भरोसा करता है। वह देखता है जीवन की असलियत और सोच में काफी अंतर है। ऐसे में विरूपित यथार्थ के प्रति उसका व्यंग्यात्मक तेवर जाग जाता है। उसका दृष्टि यथार्थ को अनदेखा नहीं कर पाती-

"झाड़ने फूंकने वालों को बुलाओ या किसी डॉक्टर को दिखाओ ठीक हो जाएगा सर्प का काटा है न मैंने समझा किसी मनुष्य ने काट खाया है।"

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना व्यवस्था और तंत्र द्वारा पोषित चटकार संस्कृति ।

"क्योंकि कुत्ता आदत से टुकड़खोर है तुम्हें टुक्कड़ खोरी के रास्ते बंद करने होंगे।"

अपनी कविता 'गरीबी हटाओ' में उनका व्यंग्य और भी तीखा और मार्मिक हो जाता है-

" गरीबी हटाओ सुनते ही सब के सब फटे जूते सिलवा और चप्पलों में कील जड़वा चल दिये. काफी चल लेने के बाद जब वे सोचने बैठे किधर जायें। तब तक उनके जूते फिर टूट चुके थे और वे नंगे पैर थे मोची की तलाश में।"

व्यंग्य अभावों से उपजता है और सवाल में बदलकर करुणा जगाता है। रचनाकार को अपने समय और समाज को विसंगतियों बर्दाश्त नहीं होती तो उसकी प्रश्नाकुलता व्यंग्य भाव में बदल जाती है। इसे नयी कविता में भी देखा जा सकता है।

नई कविता में कवियों ने अपने समय और समाज में व्याप्त विषमता का व्यंग्यात्मक चित्रण किया है। व्यंग्यात्मक शैली में जीवन और सभ्यता के चित्रण में काव को आशातीत सफलता भी मिली है। श्रीकांत वर्मा ने 'नगरहोन मन" शीर्षक कविता में आज के नागरिक जीवन की स्वार्थपरता, छल-छद्म-कपट से भी जदगी को स्वर दिया है। अज्ञेय की कविता 'साँप' में भी नागरिक सभ्यता पर तीखा कटाक्ष है।

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 7.569|| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 10, Issue 11, November 2021 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2021.1011125|

(12)अति बौद्धिकता

नई कविता के कवियों में महसूस करने की क्षमता कम है। कवियों ने बुद्धि के द्वारा दिमागी कवायद की है। नया कवि हृदय को प्रकट न करके युद्ध का ही अधिक आश्रय लेता है। उन्होंने अपनी बुद्धि से अपन समय और समाज की समस्या पर मजी की समस्या पर गर्भ चितता ददकत की है और ये कवि अपनी समस्याओं का समाधान भी बौद्धिकता के धरातल पर खोजते हैं।

(13) नए शिल्प की प्रतीक योजना और बिंब विधान

नयी कविता के कवियों ने नएपन के अतिआग्रह की वजह से विलक्षण और अपूर्व प्रतीक प्रयोग किया है। अज्ञेय लिखते हैं-

"अगर मैं यह कहूं बिछली घास हो तुम लहलहाती हवा में कलगी छरहरी बाजरे की?"

मुक्तिबोध के नए उपमान विचित्र हैं-

"अहं भाव उत्तुंग हुआ है तेरे मन में जैसे धूरे पर उठा है धृष्ट कुकुरमुत्ता उन्मुक्त"

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना की कविता का प्रतीकार्थ निराला है। एक उदाहरण देखिए-

" लोकतंत्र को जूते की तरह लाठी में लटका भागे जा रहे हैं सभी सीना फुलाए।"

नयी कविता में ऐसी अनूठी बिंब-योजना मिलती है जितनी इस से पूर्ववर्ती हिंदी कविता में नहीं थी। नयी कविता के बिंब अधिकतर प्रतीकात्मक और सांकेतिक होते हैं। कई जगह उसमें जटिलता और दुरुहता भी मिलती है। सर्वेश्वर दयाल सक्सेना की 'यह खिड़की' शीर्षक कविता का कथ्य अपना शिल्प निर्धारित करता हुआ कई अमिट बिंबों की रचना करता है-

"जिंदगी मरा हुआ चूहा नहीं है जिसे मुख में दबाए बिल्ली की तरह हर शाम गुजर जाए और मुंडेर पर कुछ खून के दाग छोड़ जाए।"

विचारों के कवि श्रीकांत वर्मा भी कई जगह प्रतीकात्मक बिंबों में अपनी बात रखते हैं-

"एक अदृश्य टाइपराइटर पर साफ-सुथरे कागज-सा चढ़ता हुआ दिन तेजी से छपते मकान, घर, मनुष्य..." घास का घराना' के सृजक मणि मधुकर लिखते हैं-

" मेरी असलियत में एक छेद है, चुगलखोर है और सचमुच मुझे उस का खेद है।"

बेहद प्रतिभाशाली लेकिन उतने ही अल्पचर्चित अजित कुमार की निम्न पंक्तियाँ नई कविता की सार्थक और कतई नई बिंब-योजना के उदाहरण-रूप में अक्सर प्रस्तुत की जाती हैं-

"चंदनी चंदन सदृश हम क्यों लिखें? मुख हमें कमलों सरीखे क्यों दिखें? हम लिखेंगे चाँदनी उस रुपए सी है जिसमें चमक है पर खनक गायब है हम कहेंगे जोर से मुंह पर अजायब है जहाँ पर बेतुके, अनमोल, जिंदा और मुर्दा भाव रहते हैं।"

नए कवियों ने आधुनिक खड़ी बोली के अनेक रूपों को प्रयुक्त किया है तथा अनेक नए विशेषणों एवं क्रियापदों का भी निर्माण किया है। इन्होंने भाषा के सौंदर्य में वृद्धि के लिए नवीन प्रतीक-योजना, बिंब-विधान एवं उपमान योजना को भी अपनाया है। प्राकृतिक बिंब का एक नवीन उदाहरण दर्शनीय है-

"बूंद टपकी एक नभ से किसी ने झुक कर झरोखे से कि जैसे हँस दिया हो!"

नए कवियों ने छंद के बंधन को स्वीकार न करके मुक्त परंपरा में ही विश्वास रखा है। कहीं लोकगीतों के आधार पर रचना की है, कहीं अपने क्षेत्र में नए प्रयोग भी किए हैं। कुछ ऐसी भी कविताएँ लिखी हैं जिनमें न लय है, न गति है, बल्कि पद्य जैसी शुष्क और नीरस है। कुछ नए कवियों ने रुबाइयों, गज़लों और सॉनेट पद्धति का भी इस्तेमाल किया है।[19,20] नई कविता के कवियों ने बिल्कुल उपमानों, प्रतीकों और बिंबों का प्रयोग किया है। अज्ञेय पुराने उपमानों से उकताकर नवीन उपमानों के प्रयोग पर बल देते हैं। नया कवि वैज्ञानिक उपमानों का प्रयोग भी करता है। इन कवियों ने कलात्मक, प्राकृतिक, वैज्ञानिक, पौराणिक तथा यौन प्रतीकों का खुलकर प्रयोग किया है। कलात्मक प्रतीक का उदाहरण देखिए-

"ऊनी रोएंदार लाल-पीले फूलों से

छोटा-सा एक गुलदस्ता है।"

नई कविता के बिंब का धरातल भी व्यापक है। इन कवियों ने जीवन। समाज और उनसे संबंधित समस्याओं के लिए सार्थक एवं सजीव बिंबों की योजना की है। ये बिंब मानव-जीवन और प्रकृति से लिए गए हैं-

'मरहरे वाले शौचालय के जंगल में झुकी पीपल डाल आचमन करती नदी का।"

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 7.569|| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 10, Issue 11, November 2021 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2021.1011125|

नई कविता आज भी नए कथ्यरूप में मौजूद है। साठोत्तरी समकालीन कविता, कविता, विद्रोही कविता, संघर्षशील कविता, आज की कविता आदि अनेक काव्य धाराएँ नयी कविता आंदोलन के बाद अस्तित्व में आई लेकिन सब में दृश्य-अदृश्य रूप में एक अमिट अंतर्धारा बनकर नयी कविता की उपस्थिति महसूस होती रही है। आज की कविता में भी नई कविता खुद को विकसित कर रही है।

शिल्पगत विशेषता

प्रयोगवादी यों की शिल्प प्रवृत्ति का प्रभाव नयी कविता में दिखाई देता है। बिम्ब,प्रतीक, नवीन अप्रस्तुत विधान आदि का प्रयोग पूर्ववर्ती कविता के साथ नयी परिवर्तन दृष्टि से किया गया है। नयी कविता के भीतर अभिव्यक्ति की सम्प्रेषणीयता का प्रश्न महत्वपूर्ण हो चुका है। भाषा सरंचना, भाषा प्रयोग, अनुभावित संवेद्य-तत्व, गतिशीलता की दृष्टि से नयी कविता की भाषा विशिष्ट है।

भाषा

नये कवियों में यह विचार पनपा की परंपरागत भाषा से युग-जीवन के सही चित्रण की आशा नहीं की जा सकती थी। मूल रूप में यही कारण था जिससे नये कवि को भाषा संस्कार की आवश्यकता पड़ी।" नयी कविता भाषा की विशेषता यह है की वह किसी एक पध्दति में बंधकर नहीं चलती किन्तु प्रभावि एवं सशक्त अभिव्यक्ति के लिए उत्कृष्ट कवि बोलचाल की भाषा-प्रयोग को प्राधान्य देता है। नयी कविता भी उसी का स्वीकार करती है। भवानी प्रसाद की'सतपुड़ा के जंगल' कविता जंगल प्रकृति और प्रवृत्ति दोनों को सामने लाती है आशोक वाजपेयी की कविता शहर अब भी संभावना है, का उदाहरण देवराज ने दिया है, "माँ/लौटकर जब आऊँगा/क्या लाऊँगा/यात्रा के बाद की थकान/सूटकेस में धर भर के लिए कपड़े/मिठाइयां, खिलौने/बड़ी होती बहनों के लिए/अंदाज से नयी फैशन की चप्पलें/ संस्कृत, अंग्रेजी उर्दू, जनपदीय बोली-शब्द का प्रयोग नयी कविता में हुआ है। त्रिलोचन, केदारनाथ अग्रवाल, धूमिल, सर्वेश्वर आदि में यह देखे जाते है। 'लोक भाषा, लोक धून' और 'लोक संस्कृति' का प्रयोग 'गीति साहित्य' में हुआ है। अज्ञेय की कलगी बाजरे की कविता उत्कृष्ट उदा है।

नयी कविता के नये मुहावरे भाषा को 'सार्वजनीक' बनाते है। भाषा का साधारणीकरण नयी कविता की विशेषता है। कहीं कही सपाटबयानी या वक्तव्य नुभा'भाषा का प्रयोग भी प्रचुर हुआ है। धूमिल आदि की भाषा इसी प्रकार की है। सामान्य आदमी, सामान्य भाषा उनकी खासियत है

"रांपी से उठी हुई आँखों ने मुझे क्षणभर टटोला और फिर जैसे पतियाते हुए स्वर में वह हँसते हुए बोला बाबूजी! सच कहूँ-मेरी निगाह में न कोई छोटा है न कोई बड़ा है मेरे लिए, हर आदमी एक जोड़ी जुता है जो मेरे सामने मरम्मत के लिए खड़ा है।"

नयी कविता में गद्य भाषा का प्रयोग भी सर्व स्विकृत हो गया है। अधिकार लम्बे चौड़े वाक्य, वक्तव्य देते, बात समझाते, वर्णन करने इसी प्रकार की भाषा प्रयुक्त हुई है।

अज्ञेय की कविता का एक उदाहरण-

"और एक चौथा मोटर मैं बैठता हुआ चपरासी से फाइलें उठाएगा एक कोई बीमार बच्चे को सहलाता हुआ आश्वासन देगा-देखो, हो सका तो जरुर ले आऊँगा"

और एक कोई आश्वासन की असारता जाते हुआ भी मुस्काराकर कहेगा- "हाँ, जरुर, भूलना मत। इससे क्या कि एक की कमर झूकी होगी और एक उमंग से गा रहा होगा- 'मोसे गंगा के पार..." और एक के चश्मे का काँच टूटा होगा और एक के बस्ते में स्कूल की किताबें अधिक से अधिक फटी हई होगी? एक के कुरते की कुहनियाँ छिदी होंगी,

एक के निकर मे बटनों का स्थान एक आलपीन ने लिया होगा। नयी कवियों के रचनाओं में चिन्ह संकेतों से भी कविता पंक्तियाँ लिखी जा चुकी है। एक शब्द एक पंक्ति बना है। तो दुसरी ओर विराम, अर्धविराम, पूर्णविराम के चिन्हों को तिलांजलि दी गयी है। जैसे- "भाषण में जोश है पानी ही पानी है पर की च ड खामोश है"

मुक्तछंद का, मुक्तक शैली का स्वीकार नयी कविता के धारा में हुआ है। जटिल एवं उलझी हुई अनुभूतियों को व्यक्त करते समय जैसा चाहा वैसा प्रयोग हुआ है। इसकों देवराज भाषा क्षेत्र में 'विद्रोह' कहते है और इसके पीछे 'चमत्कार की अपेक्षा विवशता' की अधिकता मानते है। 'बदले हुए परिवश को चित्रित करने के लिए उन्होंने 'एक ऐसा मुहावरा स्वीकार कर लिया था, जिसके अनुसार आपाद-मस्तक कीचड़ से भरे मानव को भी मानव तुम सबसे सुंदरतम कहना जरुरी था।" इसलिए उन्होंने ने भाषा को ही नये संस्कार दिये। प्रगति-प्रयोग काल की अपेक्षा नयी कविता की भाषा-शैली नयी ही रही है।

प्रतिक

नयी कविता में परंपरागत तथा नये प्रतीकों का प्रयोग हुआ है। कुछ कवियों के कविता शीर्षक ही प्रतीकात्मक है अज्ञेय की 'नदी के द्वीप', सागर तट की सीपियाँ, मुक्तिबोध की 'ब्रह्मराक्षस', 'भूल-गलती' 'लकड़ी का रावण' अंधेरे में 'अंधेरा, काला पहाड, तिलक की मुर्ती, गांधी, आकाश में तालस्ताय आदी प्रतीक ही है।'ब्रह्मराक्षस' वर्तमान में बाँह यांत्रिक संघर्षो के बीच पीड़ित मानव का प्रतीक है, तो 'लकड़ी का रावण' शोषक सत्ता का और 'वानर जनवादी क्रांतिकारियों के प्रतीक है। "बढ़न न जाय। छिन जाए। मेरी इस अद्वितीय/सत्ता के शिखरों पर स्वर्णाभ/हमला न कर बैठे खतरनाक/ कुहरे के जनतंत्री। वानर से नर ये।"

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 7.569|| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 10, Issue 11, November 2021 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2021.1011125|

नयी कविता में तीन प्रतीक रुपों का प्रयोग हुआ है। एक जिनका संबंध भारतीय काव्यशास्त्र की परंपरा से है। इनमें प्राकृतिक, पौराणिक, ऐतिहासिक, अन्योक्ति मूलक, रुपक मूलक और बिम्ब मूलक आदि आते है। दुसरे वे प्रतीक है जिन्हें नये कवियों ने गढ़ा है। और तीसरे वे प्रतीक है जो भारतीय साहित्य में किसी एक भाव-बोध के प्रतिनिधि है तथा दूसरे देशों के साहित्य में किसी दूसरे भाव-बोध के किन्तु नये कवियों ने दूसरे देश की मान्यता के आधार पर ही उन्हें अपने काव्य में प्रयुक्त किया है-

"लो क्षितिज के पास वह उठा तारा, अरे! वह लाल तारा नयन का तारा हमारा सर्वहारा का सहारा"

में भारत भूषण अग्रवाल ने 'लाल तारा' रूसी क्रांति के रुप में प्रयुक्त किया है जबकी भारत में वह अपशकुन का प्रतीक माना जाता है। अज्ञेय की 'साँप' 'बावरा आहेरी' इसी प्रकार की कविता है। खंडकाव्यों में पौराणिक प्रतीकों का प्रचूर प्रयोग हुआ है। कर्ण, द्रोण, अभिमन्यू, एकलव्य, अश्वत्थामा, सीता, द्रोपदी, आदि।

बिम्ब

बिम्ब को मुर्त शब्द-चित्र कहते है। कविता के लिए वह महत्वपूर्ण साधन है जो कवि अनुभूति को प्रभावक्षमता के साथ पाठकों तक पहुंचाता है। स्वंयनिर्मित मौलिक बिम्ब का प्रचूर प्रयोग नयी कविता में हुआ है। बिम्ब कई प्रकार के होते है। मुक्तिबोध ने बिम्बों का समर्थ प्रयोग कविता में किया है। उन्होंने मानव-हृदय की जटिलता को एक प्राकृत गुहा के समान बिंब माना है- "भूमि की सतहों के बहुत नीचे/अंधियारी एकान्त/प्राकृत गुहा एक।"

कई वैज्ञानिक बिंबों का प्रयोग आधुनिक जीवन को व्यक्त करने के लिए मुक्तिबोध ने किया है- सितारे आसमानी छोर/पर फैले हुए/अनगिनत दशमलव से/दशमलव-बिंदूओं के सर्वतः/पसरे हुए उलझे गणित मैदान में। अथवा एक एक वस्तु या एक-एक प्राणाग्नि-बम है/ये परमास्त्र है, प्रक्षेपास्त्र है, यम है/शून्याकाश में से होते हुए वे/अरे, अरि पर ही टूट पड़े अनिवार। प्रक्षेपास्त्र, शेवलेट-डाज, रेडियो एक्टिव रत्न, कैमरा, रेफ्रिजरेटर जैसे बिंब मिलते है जो पूरी तरह आधुनिक जीवन संवेदों को व्यक्त करते है। प्रतीकात्मक बिंबों का तो खज़ाना ही नयी कविता में है। मुक्तिबोध में ब्रह्मराक्षस, अंधी गुफा, भूत आदी। के साथ ही संशय की एक रात, कनुप्रिया, असाध्य वीणा, मोचिराभ, आदि में कई बिंबों को प्रस्तुत किया गया है। मनोवैज्ञानिक तथा यौन बिंबों को भी प्रयुक्त किया गया है परंतू उत्तरोत्तर नयी कविता ने बिंबों की जगह सपाटबयानी वक्तव्य दिये है। बाद के कवियों ने संभवतः बिंबों को काव्य का साधक मानने के बजाय बाधक ही माना है। केदारनाथ सिंह जैसे कवि जिन्हे बिंबों का कवि कहा जाता है वे भी कह रहे है-

"तुमने जहाँ लिखा है 'प्यार' वहाँ लिख दो 'सड़क' फर्क नहीं पड़ता। मेरे युग का मुहावरा है फर्क नहीं पड़ता और भाषा जो मैं बोलना चाहता हूँ मेरी जिहवा पर नहीं बल्कि दाँतों के बीच की जगहों में सटी हुई है।"

डॉ. नामवर सिंह ने ठीक कहा है- 'वस्तु: इस बिंब-मोह के टूट ने का कारण सामाजिक और ऐतिहासिक है। छठे दशक के अंत और सप्तवें दशक के आरंभ में सामाजिक स्थिति इतनी विषम हो उठी कि उसकी चुनौति के सामने बिंब-विधान कविता के लिए अनावश्यक भार प्रतीत होने लगा।

लय,तुक और छंद

लय, तुक और छंद की अवधारणा छायावाद से हटने लगी है। निराला ने मुक्त छंद की घोषणा की पंत ने भी नयी काव्य भाषा को अपनाया नयी कविता ने तो छंद को अस्वीकृत ही किया परंतू उसके नये प्रयोग भी हुए है। देवराज ने ठीक कहा है- नयी कविता में छन्द को केवल घोर अस्वीकृति ही मिली हो- यह बात नहीं है, बल्कि वहाँ इस क्षेत्र में विविध प्रयोग भी किए गए है। इस संबंध में पहला प्रयोग हिन्दी के पुराने छंदों को तोड़कर नया मुक्त छंद बनाया गया, जैसे गिरिजाकुमार ने कवित्त व सवैया में तोड़-फोड़ की रामविलास शर्मा ने छनाक्षरी से रुबाई का निर्माण किया दूसरे प्रयोग में विविध देशी-विदेशी भाषाऔ के छंदों को नयी कविता में लाया गया। देशी भाषा में, बंगला, मराठी, संस्कृत और विविध लोक-भाषाओं के छंद समय समय पर प्रयोग किए गए। विदेशी भाषाओं में अंग्रेजी के 'सॉनेट', 'बैलेड', जपानी का 'हायकू'और चीनी फ्रेंच और अमरीकी कविता के चित्रों को नयी कविता में प्रयोग किया गया।" छंद का संबंध संगीत से रहा है और संगीत तुक, लय से जुड़ा है। नयी मुक्त छंद कविता 'गीत कविता के रुप में विकसित हुई है परंतू इन गीतों में केवल भावानकलता नहीं जीवन की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक व मनोवैज्ञानिक स्थितियों का अंकन है।[21,22] 'गीत' नयी कविता की महत्वपूर्ण विशेषता मानी जाती है। जो लोकगीत 'लोक धुनों लोक परंपराओं, लोक संस्कृति'से जुड़ा है।

उपसंहार

नई कविता जनता की और जनता के साथ की कविता है। वह परंपरा से विच्छेद होने के बावजूद परंपरा से मुक्त नहीं है। इस कविता आंदोलन से हिन्दी साहित्य में मुक्तिबोध,भवानी प्रसाद मिश्र, शमशेर बहादुर सिंह, कीर्ति चौधरी, भारतभूषण अग्रवाल, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, केदारनाथ अग्रवाल, लक्ष्मीकांत वर्मा, जगदीश गुप्त, मुद्रा राक्षस, नेमिचंद्र जैन,प्रभाकर माचवे, राजकमल चौधरी, रघुवीर सहाय, श्रीकांत वर्मा, दुष्यन्त कुमार, धूमिल, कुंवर नारायण, कैलाश वाजपेयी, श्रीराम वर्मा, दुधनाथ सिंह जैसे सशक्त महत्वपूर्ण कवि उभरकर आये। देवराज ने कहा है की 'इस कविता ने ही पहली बार व्यक्ति को व्यक्ति की परंपरा में रखकर देखने का प्रयास किया। भक्तिकाल से लेकर प्रगतिवाद तक व्यक्ति को मंदिर, महल, स्वर्ग, आकाश, और मार्क्स की तथाकथित मार्क्स वादियों द्वारा स्वयं की गई अस्वाभाविक व्याख्याओं के रंगीन फोटो में लपेटा जा रहा है। नयी कविता ने ही उसे आम जिन्दगी की अच्छाइयों और बुराइयों के

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 7.569|| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 10, Issue 11, November 2021 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2021.1011125|

बीच मनोवैज्ञानिक रुप में चित्रित किया है। अतः नयी कविता ने व्यक्ति को परंपरा से काटा नहीं, बल्कि जोड़ा है। "यह मत सही भी प्रतित होता हो परंतू कबीर जैसे कवियों ने जनता की बात जनता की भाषा में कही है, वह हिन्दी साहित्य में पहला कवि और उसकी कविता है जिसने जनाभिव्यक्ति को पूर्ण रुपेन स्विकार किया था। नयी कविता में यह परंपरा फिर विकसित होती है। यह उसकी कटी परंपरा से जडी भावनाएँ है ऐसा कहा जायेगा।'भक्ति काल' शब्द प्रयोग जब देवराज करते है तो कबीर उसी काल में आते है। और उन्हें यों खारिज करना, योग्य होगा, क्योकि शुक्लजी के अनुसार 'ऊँच-नीच और जाति-पॉती के भाव का त्याग और भक्ति के लिए मनुष्य मात्र के समानाधिकार का स्वीकार था। "कबीर में मनुष्य मात्र के लिए समानाधिकार की भावना ने उन्हें सामाजिक, जनताभिमुख बनाया और उन्हीं के दुःख, पीड़ा, विषमता को कविता में लाया मनुष्य पर ईश्वर, धर्म, परंपरा, रुढ़ियों की गुलामी के वर्चस्व को उठाया। वर्ण-विषय के साथ भाषा भी उसी प्रकार की रही है। 'खिचड़ी' अथार्त साधारण जन की भाषा है। नयी कविता में भी 'भीड़', 'समुह' अभिव्यक्त हुआ है। उस की स्वतंत्रता की रक्षा का प्रश्न खड़ा किया गया है। उसके अन्तबाहय व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति ने उसे कबीर की परंपरा से जोड़ा ऐसा कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी।

निष्कर्ष

मैं अधूरी दीर्घ कविता खण्ड   यह सम्भवतः हिन्दी में किसी लेखक की सबसे लम्बी जीवनी है। इसमें सन्देह नहीं कि इस वृत्तान्त से हिन्दी के एक शीर्षस्थानीय लेखक के सृजन और विचार के अनेक नये पक्ष सामने आएँगे और कविता तथा आलोचना की कई पेचीदगियाँ समझने में मदद मिलेगी।

मुक्तिबोध के हमारे बीच भौतिक रूप से न रहने के छः दशक पूरे होने के वर्ष में इस लम्बी जीवनी को हम, इस आशा के साथ, प्रकाशित कर रहे हैं कि वह मुक्तिबोध को फिर एक जीवन्त उपस्थिति बना सकने में सफल होगी।

छायावादी व्यक्तिगतता से निकलकर प्रगतिवादी सामाजिकता में तो हम पहुंचे थे परंतू उसका प्रभाव समाप्त हो गया। नये 'प्रयोग' के स्वर भी मंद हो चुके थे। 'वाद' की प्रवृत्ति से कविता को बाहर कर जनता के बीच, जनता के दरबार में लाना कवियों को अभिप्रेत था नयी कविता में प्रगतिवाद का सामाजिक भावबोध है तो प्रयोगवाद की शिल्पगत विशिष्टता है। प्रयोगवादियों की आत्मकेंद्रितता, निराशा को उन्होने सामाजिक व्यापार का आधार दिया। नयी कविता की भिन्नता यही है। लक्ष्मीकांत वर्मा ने 'दूसरा सप्तक' के बाद के कवियों ने सारी कविता को दूसरा सप्तक के निकटवर्ती पाते हुए किन्हीं अर्थो में कुछ भिन्नता का अनुभव किया। ये वही सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, साहित्यिक भिन्नता है जो नयी कविता प्रवृत्तियों में विकसित हुई। साथ ही विदेशी वादों का प्रभाव भी उस पर रहा है। खासकर वाद विषय में मनोविश्लेषण का तो अभिव्यक्ति क्षेत्र में बिंब प्रतिक का निराला द्वारा 'खून सींचा खाद का तूने अशिष्ट, डाल पर मंडरा रहा है कैपिटलिस्ट' की घोषणा ने परिस्थिति की वास्तविकता को पहचाना था। जिसमे यथार्थ का दामन पकड़कर प्रगतिवाद उभर कर आया। वही प्रयोगवाद में सामाजिक अतियथार्थवाद में अपनी कुंठा की व्यंजना साहित्य में करता रहा।

नयी कविता मात्र सभी प्रकार के दूषणों से मुक्त प्रांगण में आयी। प्रयोगवाद को नई कविता की भूमिका कहा जा सकता है। देवराज ने सही कहा है की, "इन कविताओं को नयी कविता की पूर्ववर्ती कहा जा सकता है, इन कविताओं की प्रकृति का अध्ययन करने से इसमें और 'नयी कविता' आंदोलन की काव्य-चेतना में अंतर स्पष्ट परिलक्षित हो जाता है, किन्तु यह अन्तर विरोधी नहीं है, यह विकास प्रक्रिया का अन्तर है।" इसलिए देवराज इसे नयी कविता भी नहीं कहते उन्हें 'संक्रमणकालीन कविताएँ' कहते है, किन्तु 'नयी कविता' नाम अब उसके लिए एक बार चल पड़ा सो वही रहा हैं।[22]

संदर्भ

1. {1} डॉ. नागेन्द्र, डॉ.हरदयाल-हिंदी साहित्य का इतिहास-मयूर पेपरबैक्स- प्रष्ठ स. 612-613
2. ↑ {2}(डॉ. हेमंत कुकरेती- हिंदी साहित्य का इतिहास-सतीश बुक डिपो, प्रष्ठ स.110)
3. "कविता" । ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी । ऑक्सफोर्ड यूनिवरसिटि प्रेस। 2013. 18 जून 2013 को मूल से संग्रहीत। कविता [...] साहित्यिक कार्य जिसमें भावनाओं और विचारों की अभिव्यक्ति को विशिष्ट शैली और लय के उपयोग से तीव्रता दी जाती है; कविताएँ सामूहिक रूप से या साहित्य की एक शैली के रूप में।
4. ^ "कविता" । मेरिएम वेबस्टर । 2013 कविता [...] 2: वह लेखन जो अर्थ, ध्वनि और लय के माध्यम से एक विशिष्ट भावनात्मक प्रतिक्रिया बनाने के लिए चुनी और व्यवस्थित की गई भाषा में अनुभव की एक केंद्रित कल्पनाशील जागरूकता तैयार करता है।
5. ^ "कविता" । डिक्शनरी.कॉम । 2013. कविता [...] 1 सुंदर, कल्पनाशील या ऊंचे विचारों द्वारा रोमांचक आनंद के लिए लिखित या मौखिक लयबद्ध रचना की कला।
6. ^ रूथ फिननेगन, अफ्रीका में मौखिक साहित्य , ओपन बुक पब्लिशर्स, 2012।

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 7.569|| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 10, Issue 11, November 2021 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2021.1011125|

7. ^ स्ट्रेचन, जॉन आर.; टेरी, रिचर्ड जी. (2000). कविता: एक परिचय . एडिनबर्ग यूनिवर्सिटी प्रेस। पी। 119. आईएसबीएन 978-0-8147-9797-6.
8. ^ एलियट, टीएस (1999) [1923]। "आलोचना का कार्य"। चयनित निबंध . फैबर और फैबर. पृ. 13-34. आईएसबीएन 978-0-15-180387-3.
9. ^ लॉन्गेंबैक, जेम्स (1997)। आधुनिकतावाद के बाद आधुनिक कविता । ऑक्सफोर्ड यूनिवरसिटि प्रेस। पी। 9 , 103. आईएसबीएन 978-0-19-510178-2.
10. ^ श्मिट, माइकल, एड. (1999)। अंग्रेजी में द हार्विल बुक ऑफ ट्वेंटिएथ-सेंचुरी पोएट्री । हार्विल प्रेस। पीपी. xxvii–xxxiii . आईएसबीएन 978-1-86046-735-6.
11. ^ होइविक, सुसान; लुगर, कर्ट (3 जून 2009)। "जैव विविधता संरक्षण के लिए लोक मीडिया: हिमालय-हिंदू कुश से एक पायलट परियोजना"। अंतर्राष्ट्रीय संचार राजपत्र । 71 (4): 321-346। डीओआई : 10.1177/1748048509102184 । एस2सीआईडी 143947520 ।
12. ^ गुडी, जैक (1987)। लिखित और मौखिक के बीच का इंटरफ़ेस । कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस. पी। 78 . आईएसबीएन 978-0-521-33794-6. [...] विभिन्न प्रकार की कविताएँ, कहानियाँ, पाठन लेखन शुरू होने से बहुत पहले से मौजूद थे और ये मौखिक रूप लिखित साहित्य की स्थापना के बाद भी संशोधित 'मौखिक' रूपों में जारी रहे।
13. ^ऊपर जायें:[ए बी] गुडी, जैक (1987)। लिखित और मौखिक के बीच का इंटरफ़ेस । कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस. पी। 98. आईएसबीएन 978-0-521-33794-6.
14. ^ गिलगमेश का महाकाव्य । सैंडर्स, एनके द्वारा अनुवादित (संशोधित संस्करण)। पेंगुइन पुस्तकें। 1972. पीपी. 7-8.
15. ^ मार्क, जोशुआ जे. (13 अगस्त 2014)। "दुनिया की सबसे पुरानी प्रेम कविता" ।'[...] मेरे हाथ में जो था वह मनुष्य के हाथ से लिखे गए सबसे पुराने प्रेम गीतों में से एक था।'
16. ^ अरसु, सेबनेम (14 फरवरी 2006)। "विश्व की सबसे पुरानी रेखा" । दी न्यू यौर्क टाइम्स । 1 मई 2015 को लिया गया . प्राचीन ओरिएंट के इस्तांबुल संग्रहालय में इस महीने एक विशेष प्रदर्शन में एक छोटी गोली को अब तक मिली सबसे पुरानी प्रेम कविता माना जाता है, जो 4,000 साल से भी अधिक पहले के एक प्रेमी के शब्द हैं।
17. ^ चाइला, जूलिया; रोसिंस्का-बालिक, करोलिना; डेबोस्का-लुडविन, जोआना (2017)। इजिप्टोलॉजी में वर्तमान शोध 17 । ऑक्सबो पुस्तकें। पृ. 159-161. आईएसबीएन 978-1-78570-603-5.
18. ^ अहल, फ्रेडरिक; रोइसमैन, हन्ना एम. (1996)। ओडिसी पुनः गठित । कॉर्नेल यूनिवर्सिटी प्रेस। पृ. 1-26 . आईएसबीएन 978-0-8014-8335-6..
19. ^ एब्रे, पेट्रीसिया (1993)। चीनी सभ्यता: एक स्रोतपुस्तिका (दूसरा संस्करण)। द फ्री प्रेस. पृ. 11-13 . आईएसबीएन 978-0-02-908752-7.
20. ^ कै, ज़ोंग-क्यूई (जुलाई 1999)। "सद्भाव की खोज में: कविता पर प्लेटो और कन्फ्यूशियस" । दर्शन पूर्व और पश्चिम . 49 (3): 317-345। डीओआई : 10.2307/1399898 । जेएसटीओआर 1399898 ।
21. ^ एबोंडोलो, डैनियल (2001)। एक काव्य पुस्तिका: यूरोपीय परंपरा में मौखिक कला । कर्जन. पृ. 52-53. आईएसबीएन 978-0-7007-1223-6.
22. ^ जेंट्ज़, जोआचिम (2008)। "पाठात्मक रूप का अनुष्ठान अर्थ: ऐतिहासिक और अनुष्ठानिक परंपराओं की प्रारंभिक टिप्पणियों से साक्ष्य"। केर्न में, मार्टिन (सं.)। प्रारंभिक चीन में पाठ और अनुष्ठान । वाशिंगटन विश्वविद्यालय प्रेस। पृ. 124-148. आईएसबीएन 978-0-295-98787-3.

INNO SPACE
SJIF Scientific Journal Impact Factor

Impact Factor:
7.569

doi crossref

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

निस्केयर NISCAIR

INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

9940 572 462 6381 907 438 ijirset@gmail.com

Scan to save the contact details

www.ijirset.com